सूक्तिस्तबकः

(1) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः। न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

<u>अर्थात</u> - उद्यम से हि कार्य सफल होते हैं, ना कि मनोरथों से ठीक उसी प्रकार सोए हुए शेर के मुख में हिरण नहीं आते।

(2) पुस्तके पठितः पाठः जीवने नैव साधितः। किं भवेत् तेन पाठेन जीवने यो न सार्थकः॥

<u>अर्थात</u>- यदि पुस्तक में पढ़ा हुआ

पाठ जीवन उपयोग नहीं लगता गया तो जो पाठ जीवन में सार्थक नहीं @ उस पाठ से क्या लाभ ?